हिंदी अनुभाग

संपादक की कलम से

"जीवन में कितनी परेशानियां हैं", "मैं अपने जीवन से परेशान हूँ" इस प्रकार की बातें आपने अवश्य ही बहुत बार सुनी होंगी। ये वे लोग बोलते हैं जो मानते हैं कि उनके जीवन में बहुत परेशानियां हैं और जो इनसे थक चुके हैं। मैं स्वयं यही मानता था, किन्तु बीते दिनों में मैंने जो देखा है, उससे मैं ये तो नहीं कहूँगा कि मुझे प्रबोधन मिल गया किन्तु हाँ अवश्य ही कुछ बातें समझ में आई हैं।

दुःख आखिर क्या है। ये और कुछ नहीं बल्कि खुशी तथा प्रसन्नता की कमी है। क्या अपने जीवन और भगवान को कोसने वाले कभी यह सोचते हैं कि आज कम से कम मेरे पास भोजन है और दुनिया के कई कोनों में आज और अभी भी ऐसे बच्चे–बूढ़े सो रहे होंगे जिनके पेट में कई दिनों से अन्न का एक दाना भी न गया हो। क्या वे सोचते हैं कि जिस भी हाल में कम से कम मेरे पास सर के ऊपर एक छत है और हम सभी इस बात से अवगत हैं कि न केवल भारत बल्कि दुनिया के कई कोनों में ऐसे लोग हैं जो बारिश हो, ठंडी हो या गर्मी हो बिना किसी घर के सो रहे हैं। क्या कभी वे लोग भगवान को धन्यवाद बोलते हैं कि भगवान ने उन्हें आज का दिन दिया जो कई लोगों से छीन गया है। नहीं (कम से कम मैंने स्वयं तो ये सब नहीं सोचा था)।

हमें ये समझना होगा कि भगवान ने दुनिया में किसी को भी परेशानियों से मुक्त नहीं छोड़ा है। छात्रों को पढ़ाई से सम्बंधित परेशानियां हैं तो वहीं बड़ों को अन्य परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। हमें अपनी तरफ से स्वयं को प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए और कभी भी ऐसी बेकार की बातों को लेकर दुखी नहीं होना चाहिए। जब भी लगे कि जीवन में कुछ अच्छा नहीं है तो सोचिये उन लोगों के बारे में जिनके जीवन में सच में कुछ भी अच्छा नहीं है। आपको कुछ न कुछ अवश्य ही ऐसा मिल जाएगा जो आपको प्रसन्नता की अनुभूति दे। चाहे वो आपके मित्र हों, आपके भाई–बहन हों, आपके माता–पिता हों या आदि और किसी की गलती से क्रोधित होकर व्यर्थ ही अपने जीवन में दुःख की मात्रा न बढ़ाए। क्रोधित होने से सामने वाले का नहीं बल्कि स्वयं का ही नुकसान होता है। अवश्य ही दूसरे को उसकी गलती सुधारने का मौका दे और यदि आपको जरा सा भी ये लगे कि दूसरे को अपनी गलती का एहसास है, उसे अवश्य ही क्षमा कर पुराने बैर भूल जाएँ। इससे दोनों ही पक्षों का भला होगा और साथ ही आपको खुश रहने में सहायता होगी।

–यशवर्धन राय

परिसर वार्ता

बुजुर्गों ने सच ही कहा है कि "हर पुरानी चीज़ को मरम्मत की जरुरत पड़ती है" यही सोचते हुए हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य ने हमारे प्रमुख इमारत जिसका नाम 'कॉन्स्टेंशिया' है, जो १७० साल पुरानी है। इसकी प्रमुख बात यह है कि यह १८५६ के ग़दर से पहले बना था, तो देखते ही देखते इस इमारत का रंग ढ़ल गया। इसे सफेद रंग से रंगा जा चुका है जिसके ऊपर से दूसरा रंग जल्द ही चढ़ाया जाएगा।

यह हमारे विद्यालय का सबसे प्रमुख समाचार है कि अब थ्री कॉर्नर हट गया है, उसकी जगह सीढ़ियाँ बना दी गयी हैं ताकि छात्रों के आने–जाने में कोई दिक्कत न हो। इसके चलते हमने कुछ छात्रों से उनके विचार जानने का प्रयास किया। उनके विचार कुछ यूं थे–

१.मैंने उसमें बहुत सारी पेंटिंग बनाई। थी।

–दिवस जायसवाल

२. वहाँ पर मैं बंक किया करता था। **–विद्या सागर सिंह**

३. मुझे बहुत खराब लग रहा है, वहाँ पर मैं और मेरे दोस्त टिफिन खाते थे, वहां पर बहुत सुन्दर चित्र थे। **–कार्तिकेय श्रीवास्तव**

४. मुझे बहुत दुख हो रहा है। वहां हमारे भाइयों की यादें जुड़ी हुई हैं। मेरे हिसाब से बहुत गलत हुआ है क्योंकि विद्यालय छोड़ चुके छात्र जब लौटेंगे और देखेंगे कि उनके बनाए हुए चित्र गायब हो चुके हैं तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा।

स्पेन्स हॉल जो श्रीमान जॉन.ए.बी. स्पेन्स के नाम से पड़ा है, उसका पुनर्निर्माण हुआ है। स्पेन्स हॉल में सॉफ्ट बोर्ड लगाए गए हैं। नई लाइटें लग गई हैं और हॉल का सौन्दर्यीकरण भी किया गया है। उसका रंग लाल और पीला किया गया है।

विद्यालय में ४ नए घोड़े आए हैं जिनमे से एक का नाम सुल्तान है। अब हमारे पास २६ घोड़े हैं।

–कामरान खान

विचार वीथिका

हमारी शिक्षा प्रणाली में परियोजना व्यवस्था का महत्व, उसमें दोष एवं उसमें सुधार।

मेरे विचार परियोजना प्रणाली से काफी हद तक मेल नहीं खाते हैं। मेरा यह मानना है कि परियोजना व्यवस्था की हमारी शिक्षा प्रणाली में आवश्यकता नहीं है। आज कल यह मुफ्त में अंक बाँटने का जरिया बनता जा रहा है। जिससे न तो बच्चे कुछ सीख पाते हैं और न ही जान पाते हैं। मेरे विचार से हमें इसके बजाय वाइवा जैसी व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए जिसमें बच्चे अध्यापक के सामने प्रश्नों के उत्तर दे ताकि वे उसकी तैयारी करते वक्त कुछ सीख सकें जो कि आगे उनके काम आए। इससे अंकों की इस उछाल पर भी रोक लगेगी और मेहनत से पढ़ने वाले को ही सही अंक मिलेंगे।

–श्रीमती शीबा सिद्दीकी *(सहायक अध्यापिका, भूगोल)*

मेरे विचार इस व्यवस्था के पक्ष में हैं। इससे छात्रों में जिज्ञासा शांत होती है और मेरा यह हमेशा से मानना रहा है कि जब हम किसी चीज को देखते हैं तो वो पढ़ने से ज्यादा अच्छे से समझ में आती है। विज्ञान जैसे विषयों में जिसमें किताबों से ज्यादा असल जिन्दगी में सीखने को मिलता है उनमें तो परियोजना कार्य अतिआवश्यक है। परंतु आजकल अध्यापकों में कम इच्छाशक्ति होने के कारण वे परियोजना को जल्द निपटाना चाहते हैं। बिना यह देखे कि, किसी ने सीखा भी है या नहीं। मेरा यह मानना है कि अगर परियोजना कार्य को गंभीरता से लिया जाए तो यह बच्चों को पढ़ाने और सिखाने का अच्छा माध्यम बन सकता है।

–श्री रीनो मैथ्यूज, *(सहायक अध्यापक जैविक विज्ञान एवं कक्षाध्यापक)*

मेरे विचार से परियोजना कार्य का बहुत अधिक महत्व है, हमारी शिक्षा प्रणाली में। यह बच्चों को सिखाने एवं व्यस्त रखने का अच्छा जरिया है क्योंकि बच्चे इनको बनाते वक्त काफी खोजबीन करते हैं। जिसके कारण उसका पढ़ने में प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु आज हर विषय की अलग परियोजना करना काफी कठिन हो गया है। बच्चे पढ़ने का समय इसमें गँवा रहे हैं इस वजह से हम "इंटिग्रेटेड प्रोजेक्ट" जैसी व्यवस्था अपना सकते हैं जिसमें हर विषय का कार्य एक ही परियोजना में संपन्न हो जाए। यह छात्र एवं शिक्षक दोनों के लिए सुविधामय रहेगा।

–श्री पंकज रावत, *(सहायक अध्यापक गणित)*

मेरे विचार से परियोजना व्यवस्था आगे बढ़नी चाहिए क्योंकि यह बच्चों को खोज–बीन करने एवं नई चीजे सीखने मे मदद करते हैं। यह बच्चो में जिज्ञासा की भावना उत्पन करते हैं और उन्हें नई चीजें सीखने एवं पहले से आती चीजों को बेहतर बनाने में सहायता करती है। इनसे बच्चो में सामूहिक रुप से कार्य करने की भावना विकसित होती है जोकि उनके पूर्ण रुप से विकास में सहायक है।

–श्रीमती अनुपमा श्रीवास्तव, *(सहायक अध्यापक हिंदी एवं कक्षाध्यापक)*

संकलन एवं संवाद प्रतीक मंजुल और नेभराज लखमानी

खेल समाचार

जून के मध्य में १५ से १७ तक हमारे पड़ोसी देश नेपाल की राजधानी काठमांडू में अंतर्राष्ट्रीय खेल परिषद् और 'यूनेस्को' द्वारा आयोजित और अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा मान्यता प्राप्त, विश्व खेलों में हमारे कॉलेज के चार विद्यार्थियों ने टायक्वोंडो प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वे प्रतीक मंजुल १० ई, सार्थक अग्रवाल १०बी, देव श्रीवास्तव १०बी और मन्हर्ष सिंह ८ जी थे। हमारे खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया और देश एवं कॉलेज का नाम रोशन किया। जिसमें से प्रतीक ने जूनियर लाइट हैवीवेट में रजत पदक जीता, देव ने जूनियर हैवीवेट में स्वर्ण पदक को अपने नाम किया, वहीं सार्थक ने जूनियर वेल्टरवेट में रजत पदक पाया। मन्हर्ष ने छोटो होते हुए भी सब जूनियर हैवीवेट में रजत पदक अपने नाम किया।

हमारे खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर विद्यालय को गौरवान्वित किया है। हम छात्रों की तरफ से इन सबको बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

हमारे छोटे भाइयों के लिए जूनियर स्कूल में लगातार खेलकूद से सम्बंधित कार्यक्रम चलते रहते हैं जिसमें से हमने आजतक जिमनास्टिक्स में उनकी रूचि एवं उनके कौशल को पहुँचाने का प्रयत्न किया है। जिसमे हमें पता लगा कि जूनियर स्कूल परिसर के श्लोक श्रीवास्तव ने जिमनास्टिक्स में बेहद उम्दा एवं सराहनीय प्रदर्शन किया है। हम सबकी तरफ से श्लोक श्रीवास्तव को हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई।

–यश चन्द्रा एवं हसन काज़मी

मेरे संगी साथी

गर्मी की छुट्टी के बाद जब सभी छात्र वापस लौटे तो सभी बच्चों के चेहरे पर एक तरफ अपने साथियों से मिलने की खुशी थी तब दूसरी तरफ उन्हें अपने माता–पिता से दूर होने का दुख था, तो न उनके चेहरे पर पूरी तरह खुशी की झलक थी। छुट्टियों के बाद पहले सात दिन तो बड़ी कठिनाई से गुजरे उसके बाद धीरे–धीरे सभी बच्चो ने अपने आप को यहाँ संतुलित कर लिया। जो दिनचर्या (रोज का काम) छुट्टी के कारण छूट चुकी थी वह दिनचर्या सबने फिर से शामिल कर ली थी। जो नए बच्चे छात्रावास में आये वे लोग भी सभी बच्चो के साथ घुल–मिल गए।

पुराने बच्चों ने नए बच्चों के कुछ उपनाम भी रखे जैसे– अजीत यादव (साबू), रघुवीर मधोरिया (मलेशिया), कार्तिकेय सिंह (रास्तीकेटर), विशाल सिंह (हक्का नूडल्स), आदि जिसकी वजह से ये लोग परेशान हैं।

हर सुबह हम सभी पर उठ जाते हैं जैसे–आयुष सिंह, चडेल काज़ी आदि बच्चे सुबह उठने पर कहते हैं कि "पाँच मिनट और सोने दो" या फिर कहते हैं कि "अरे यारों पेट दर्द कर रहा है, सोने दो"। इसके बाद हम लोग नहाने जाते हैं जिसमें से कुछ तो बिना नहाए ही तैयार हो जाते हैं। –अमन त्रिपाठी, रघुवीर मधोरिया

बैस्टील दिवस कार्यक्रम

१४ जुलाई को कॉन्सटैन्शिया कैंपस में बैस्टील दिवस मनाया गया। प्रार्थना सभा में फ्रांस और भारत का झंडा संयुक्त रूप से दिखा। हमारे सहपाठी छात्र अभिज्ञ तलवार ने सभी छात्रों को हो रही फ्रेंच सभा के बारे में बताया। छात्र सक्षम तिवारी ने सुबह की प्रार्थना भी फ्रेंच भाषा में कही जिसका दूसरे छात्र ने अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी किया। आकुल ने फ्रेंच भाषा में संकल्प किया तत्पश्चात वंश शर्मा ने बस्तील दिवस के बारे में छात्रों को बताया जिसका एक छात्र ने अंग्रेजी में अनुवाद किया। जन्मदिवस की शुभकामनाएँ फ्रेंच भाषा में व्यक्त की गई। अंत में फ्रांस का राष्ट्रीय गान गाया गया और इस प्रकार फ्रेंच प्रार्थना सभा का समापन हुआ।

कॉन्सटैन्शिया परिसर में पढ़ने वाला प्रत्येक छात्र अपनी रूचि के अनुसार कोई भी भाषा सीख एवं जान सकता है यह उसका एक बेहतरीन नमूना है।

–अर्सलान खान

युवाओं के प्रति....

आज कल हमारे समाज में अभद्र तत्व जगह बनाते जा रहे हैं जिनका निवारण अति आवश्यक है वरना यह विष की भांति हमारे समाज को खोखला कर देंगे। इन असामाजिक तत्वों को यदि रोका नहीं गया तो यह हमारी युवा पीढ़ी को निगल जायेंगे जिसके कारणवश हमारे देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा जो कि हमारे लिए किसी बुरे स्वप्न की तरह है।

इन हालातों में इन सब को रोकने के लिए युवाओं को आगे आकर प्रयत्न करना होगा, बजाय इसके कि वे खुद नशा, नग्नता एवं अनेक अभद्र तत्वों का प्रयोग करें। उन्हें इन्टरनेट में पाई जाने वाली कई चीजों से दूर रहना होगा, जैसे अभद्रचलचित्र, फेसबुक आदि। हमारी युवा पीढ़ी एक संकट के समय से गुजर रही है जिसमें वे भटक जाते हैं एवं भूल जाते हैं कि उनको क्या करना है एवं उनके लिए क्या सही है। उनको यह समझना होगा कि सही मार्गदर्शन से वे इस काबिल बन सकते हैं कि वे इस विपत्ति की स्थिति से निकल कर देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाएं। हमारे देश में, जहाँ युवा बहुसंख्य है, वहां हमें समझना होगा कि देश हम पर निर्भर है और जिम्मेदारी के सफल निर्वाह के लिए हमें इन अभद्र तत्वों से दूर रहकर अपने आप को पावन रखते हुए इस लायक बनना होगा कि हम देश के प्रति एवं मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकें।

–प्रतीक मंजुल

उभरते सितारे

छात्र– नमन मिश्रा

कक्षा– ११ 'सी'

नमन मिश्रा कक्षा ११–सी के छात्र हैं। नमन ने बोर्ड कक्षा १० की परीक्षा में ९३.२% अंक हासिल किये हैं। ये कॉलेज की वाद–विवाद टीम के सदस्य हैं और इन्होंने एम.यु.एन. में स्कूल की तरफ से बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त की हैं तथा हमारे विद्यालय का नाम रोशन किया है।

इनको बिशप कॉटन स्कूल की वाद–विवाद प्रतियोगिता में बहुत से पुरस्कार मिले। नमन ने सिंधिया स्कूल एवं पाइंगशेव स्कूल के विरुद्ध बेस्ट स्पीकर का पुरस्कार मिला तथा वसंत वैली स्कूल के खिलाफ इनको द्वितीय स्पीकर का खिताब मिला। नमन ने लामार्टिनियर की टीम को सेमी–फाइनल तक पहुँचाया जिसके बाद हमें शिकस्त का सामना करना पड़ा।

इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में तीसरा राउंड क्वालीफाई कर लिया है जोकि कुछ ही छात्र कर पाते हैं। नमन ने लामार्टिनियर कलकत्ता एम.यु. एन. में वर्बल मेंशन का पुरस्कार जीता। जयपुरिया एम.यु.एन. में तथा रेवोलुशन एम.यु.एन. में नमन ने हाई कॉमेनडेशन एवं बेस्ट डेलिगेट का पुरस्कार जीता।

इनका अपने छात्र मित्रों के प्रति सन्देश–

"जो छात्रों का मन एवं दिल कहता है वही काम करें एवं उसमें अपने गुणों का प्रतिनिधित्व करें। छात्र अपनी जिम्मेदारी को न भूलें। अगर आपने ठान लिया कि आप से कोई काम नहीं हो सकता तो आप उसे कभी प्राप्त नहीं कर पाएँगे तथा लोगों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के कार्य में कभी घबराना नहीं चाहिए।"

–हस्नान उमैर

اداریہ

میں محمد مصعب خالد درجہ ۶ کا طالب علم ہوں۔ مجھے دی المارٹینیر پوسٹ میں ایڈیٹری ذمہ داری دی گئی ہے۔

میں جانتا ہوں کہ یہ ایک بڑی اور سنجیدہ ذمہ داری ہے تاہم میں کوشش کروں گا کہ اس کے فرائض پوری لگن اور ایمانداری سے پورے کروں اور اپنے استاد محترم کے خواب کو شرمندہ تعبیر کر سکوں۔ میرا کام ہر کوئی جانتا ہے کہ ایک اہم کاموں میں ہے یہاں کی دلچسپیاں خواہ وہ ادبی ہوں کہ ثقافت ہر ایک کی مثال دی جاتی ہے۔

ہم لوگ پرنسپل اور دوسری کی جانب سے یہاں اردو پڑھتے ہیں۔ ہر سال یہاں مختلف پروگرام ہوتے ہیں۔ میری کوشش ہوگی کہ میں ہر پروگرام پر ظفر کراپ وار دو میں حصہ لے کر رہوں۔

ارشل مسعود۔ درجہ ۶۔اے

اللہ زبردست اور سب پر غالب ہے۔ اس کے فیصلوں کو کوئی روک نہیں سکتا۔ اس کی گرفت سے کوئی بچ نہیں سکتا۔ اللہ علیم اور نبیر ہے۔ تمھارا کوئی بھی کوئی ارادہ اس سے پوشیدہ نہیں ہے۔ تمہارے فائدے یا نقصان کو وہ اچھی طرح جانتے ہوئے تمہیں ہدایات دیتا ہے۔ اللہ معاف کرنے والا اور توبہ قبول کرنے والا ہے۔ وہ نافرمان اور سرکش کو بھی موقع دیتا ہے کہ وہ اپنی خلاروش سے باز آجائیں۔

پھر وہ بھی اس کے دامن رحمت میں جگہ پا سکتے ہیں۔

اردو استاد سے ایک انٹرویو

سوال ۱ آپ کا نام کیا ہے؟ جواب: امرا رالحق قریشی۔ سوال: اب کی عمر کیا ہے؟ جواب: ۴۳ سال

سوال: آپ کہاں کے رہنے والے ہیں؟ جواب: لکھنو۔ سوال: آپ نے تعلیم کہاں سے حاصل کی؟

جواب لکھنو سے۔ سوال: آپ کو شعر و شاعری سے دلچسپی ہے؟

جواب: بہت زیادہ۔ سوال: آپ نے اردو زبان کا انتخاب کیوں کیا؟

جواب: میرے دادا اردو کے شاعر ہیں۔ میرے گھر میں اردو کا بھرپور ماحول ہے

یہی وجہ ہے کہ اردو میں میری دلچسپی ہی۔ سوال: آپ کو اردو پڑھانا کیسا لگتا ہے۔

جواب: بہت اچھا۔ سوال: آپ کے پسندیدہ شاعر کون ہے؟

جواب: اقبال، میر، غالب اور جوش۔ سوال: آپ کو نظم اور غزل میں کیا پسند ہے؟

جواب: غزل۔ بہت بہت شکریہ راستہ محترم

محمد میان کشی۔ ۶۔بی

فٹ بال میچ کا آنکھوں دیکھا حال

کھیل اتو کو ابھی ہی ہاشٹے فارغ ہی نہیں ہوا تھا کہ میرے ایک دوست نے مجھے بتایا کہ آج فٹ بال میچ ہے۔ مجھے پتہ چلے ہی سے تھا مگر میرے جانے کا کوئی ارادہ نہیں تھا۔ اتفاق سے میرے ساتھ میرے ایک عزیز تھے۔ جب انہوں نے سنا کہ آج میچ ہے تو میں کو اور جانے کے لئے تیار ہو گئے۔ یہ فٹ بال میچ ہمارے اسکول اور اقبال پبلی اسکول کے درمیان تھا۔ ہم سے پہلے تماشائی بہت بڑی تعداد میں پہونچ چکے تھے اور اب تک بہت سے لوگ جوق در جوق چلے آ رہے تھے۔ غرض یہ کہ خوب کہا گھمی اور رونق تھی۔ ایک میلے کا سا سماں تھا۔ مجھے میں شامل ہو کر بہت زیادہ لطف آیا۔

انس عرفان۔ ۶۔بی

اردو हिंदी अनुवाद

इदारिया

मैं मोहम्मद मुसब खालिद दर्जा ६ का तालिबइल्म हूँ। मुझे द मार्टिनियर पोस्ट में एडिटर की ज़िम्मेदारी दी गयी है। मैं जानता हूँ कि ये एक बड़ी और संजीदा ज़िम्मेदारी है ताहम मैं कोशिश करूँगा कि इसके फरायज पूरी लगन और ईमानदारी से पूरे करूँ और अपने उस्तादे मोहतरम के ख्वाब को शर्मिंद–ए–ताबीर कर सकूं। मेरा कॉलेज हर कोई जानता है कि एक एहम कॉलेजों में है। यहाँ कि दिलचस्पियाँ ख्वाह अदबी हों कि सकाफती हर एक की मिसाल दी जाती है। हम लोग बजमे उर्दू दुबई के तहत उर्दु पढ़ते हैं। हर साल यहाँ मुख्तलिफ प्रोग्राम होते हैं द्य मेरी कोशिश होगी कि मैं हर प्रोग्राम पर नजर रख कर आप को उर्दू में मुत्तला करता रहूँ।

मुसब खालिद, ६–जी

अल्लाह

अल्लाह जबरदस्त और सब पर गालिब है। इसके फ़ैसलों को कोई रोक नहीं सकता। इसकी गफलत से कोई बच नहीं सकता। अल्लाह अलीम और खबीर है। तुम्हारा कोई अमल, कोई इरादा इससे पोशीदा नहीं है। तुम्हारे फायदे या नुक्सान को वो अच्छी तरह जानते हुए तुम्हे हिदायत देता है। अल्लाह माफ करने वाला और तौबा कुबूल करने वाला है। वो नाफरमान और सरकशों को भी मौका देता है कि वो अपनी गलत रविश से बाज आ जाएं। वो भी इसके दामने रहमत में जगह पा सकते हैं।

अर्शिल मसूद, ६–ए

उर्दू उस्ताद से एक इंटरव्यू

सवाल १. आपका नाम क्या है ?

जवाब–असराराल हक क़ुरैशी.

सवाल २. आपकी उम्र क्या है ?

जवाब – ४३ वर्ष

सवाल ३. आप कहाँ के रहने वाले हैं ?

जवाब– लखनऊ.

सवाल ४. आपको शेर व शायरी में दिलचस्पी है ?

जवाब– बहुत ज्यादा.

सवाल ५. आपने उर्दू जबान का इंतेखाब क्यों किया?

जवाब– मेरे वालिद उर्दू के शायर हैं। मेरे घर में उर्दू का भरपूर माहौल है। यही वजह है कि उर्दू में मेरी दिलचस्पी है।

सवाल ६. आपको उर्दू पढ़ाना कैसा लगता है?

जवाब– बहुत अच्छा.

सवाल ७. आप के पसंदीदा शायर कौन हैं?

जवाब– इकबाल, मीर, गालिब और जोश.

सवाल ८. आपको नज्म और गजल में क्या पसंद है?

जवाब– गजल

बहुत बहुत शुक्रिया उस्तादे मोहतरम

मोहम्मद अयान शम्सी, ६–बी

फुटबॉल मैच का आखों देखा हाल

पिछले इतवार को अभी मैं नाश्ते से फारिग भी नहीं हुआ था कि मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि आज फुटबॉल मैच है। मुझे पता तो पहले से ही था, मगर मेरे जाने का कोई इरादा नहीं था। इत्तेफाक से मेरे साथ मेरे एक अज़ीज थे। जब उन्होंने सुना कि आज मैच है तो मचल गए और जाने के लिए तैयार हो गए। ये फुटबॉल मैच हमारे स्कूल और इकबाल हाई स्कूल के दरमियान था। हमसे पहले तमाशाई बहुत बड़ी तादाद में पहुँच चुके थे और अबतक बहुत से लोग जूक दर जूक चले आ रहे थे। गर्ज ये कि खूब गहमा गहमी और रौनक थी। एक मेले का समां था। मुझे उनमें शामिल होकर बहुत ज्यादा लुत्फ आया।

अनस इरफान, ६–बी

JULY ISSUE
VOLUME III ISSUE 3

LABORE ET CONSTANTIA

The Martiniere Post

EDITORIAL

Benjamin Franklin very rightly said, "Tell me and I'll forget, show me and I may remember, involve me and I learn."

Real education consists of drawing the best out of you. The education children naturally imbibe in a well-ordered household is impossible to get anywhere else. The mind must function like a living fountain and not a reservoir. Education is the constraining and directing of youth towards that right reason, which the law affirms and which the experience of the best of our elders has agreed to be truly right.

Real education is leading human souls to what is best and making the best out of them We need resources that will endure as long as life endures, make life more dignified and useful. The primary goal of real education is not to deliver facts but to guide students to the truths that will allow them to take responsibility for their lives. The aim for real education should be to teach how to think rather than what to think. It should teach us to improve our minds, so as to enable us to think for ourselves, than to lead our memory with the thoughts of other men. No matter how many mistakes you make or how slow your progress is, you are still way ahead of everyone who isn't trying. The whole object is to make the mind work. A man should look for what he is and not for what he thinks of himself to be. The mind should be able to pass judgments on events as they arise and make decisions. Real education should educate us out of ourselves into something far more finer, into selflessness which links us all with humanity. Education does not begin with the alphabets but it commences with a mother's look, with a father's nod, with a brother's noble act of forbearance. Finally the end of real education must be to discipline the mind rather than furnish it, to train it to the use of its own powers rather than to fill it with the accumulation of others. Real education is a companion which no misfortune can depress, no crime can destroy and no enemy can alienate.

Education to be real and complete must be humane; it must include not only the training of the intellect but also the refreshment of the heart and the discipline of the spirit.

DEVANSH TANDAN 12-B

CAMPUS ROUNDUP

June always turns out to be a rather monotonous month with little to no activity as the school is closed and one can feel it in the empty halls of Constantia as silence prevails throughout. The college reopened on the 3rd of July; the students returned rejuvenated and enthusiastic after almost two months of vacation. Unfortunately the assembly began on a sad note with the entire school being informed of the sad demise of a few members of the Martiniere family including the "Legend", as our principal called her, Mrs. Sheila Simlai, much to the dismay of many of the past pupils of their college.

The next day the achievements of the novel 'Drone and Aviation Club' members were recognized by decorating them with badges. The clouds showed no remorse as it rained cats and dogs for the next few days and the assembly was cancelled due to the same (which meant spending an extended period of time with our class teachers, which is disliked by most of us). After a few days, when the Sun shone bright, the members of the Editorial Board were recognized for their dedication and hard work with the distribution of badges.

After a few days, the 'Under-12' Football team of our college made us proud when they won the National Under-12 Inter-school tournament at Devlali. Since it has become a tradition of our school, the French Assembly commemorating the French Bastille day was held on the 14th of July. Some of the students of the Middle School recited the French prayer, which was followed by the pledge and the birthday song in French and most importantly the French National Anthem which was sung with fervor, a concept which is still very unique and 'Martinian' in every sense.

Mr Cummings, a well know musician from Australia, stayed at the college and judged the students taking part at various levels in the ABRSM programme. The efforts of the students were recognized at assembly on 19th July, 2017.

The preliminary round of the esteemed Frank Anthony Memorial National Inter-School debate was held in Spence Hall. The judges included some of our former teachers such as Mrs N. Singh and the chairperson was Mrs A. Khan. The debate included participants from schools from Patiala and Chandigarh as well. Our "sister school", La Martiniere Girls' College won the preliminary round of this competition (For all those wondering how that happened, our team went to some other school for the debate!

A group of four boys from the senior section of our school represented our college in a fest held at the way old and prestigious Wynberg Allen School, Mussoorie. The Two boys went for a Science related presentation and the other two for a Business quiz. Next were the all-time favourite Inter-House debates which act as a dividing line between good friends and force enemies to unite in order to compete for the overall trophy. The audience seated in the Spence Hall's always active, unanimously applauding a good speech and sleeping through a boring one!

Meanwhile, practice for the English and Hindi Entertainment Programmes has begun in full swing. We've heard through the grapevine that both the programmes are going to be awe-inspiring. After about two-hunded years, Constantia was painted and the students had the unique privilege of witnessing the crown being painted during the assembly. It was accompanied by a loud round of applause as the workers spray-painted the crown in front of the entire school.

NEIL NAUTIYAL 12-B AND GAURAV BAKSHI 12-B

BOARDING HOUSE CALLING

After the summer vacations, the College reopened to show different facades on the boarders' faces. The residents are getting into sports, most of them going for morning practice. Harshwardhan (Chor 1) has been given the honour of having someone named after him (Harsh Agarwal Chor 2) and so is trying to give up stealing, or so it seems from his act of dropping the 'Chapel Eagle' plan (although the revelation that it may not have been made of gold may also have something to do with it). In a classic tragedy Tyrel (Apu), the 'Boogie' and his partner Archit (Monkey) are facing a crisis as trees have been felled in the campus, and adding to the crisis is the fact that, at lunch, bananas are being replaced by mangoes. Yuvraj (suspender) has introduced brother in-arms Kartikey (Rusticator) and both are up to their idiocy which is increasing day-by-day. Zaid Khan, although meaning well CI (think) while showcasing his so called 'break dance', is appearing to the general public like a skeleton being electrocuted. Under some pressure, the resident scholars have now, thankfully started talking in English. Ishaan (fat ass) is back with a new car to the boarding, after the introduction of GST. Leaving his girls behind, Kaif has opened a small business of T- shirts advertising La Martiniere. On the whole, all is well and the Boarding House is full of life and frenzied as always.

DEVASHISH ANAND 12-D

ISC AND ICSE RESULT 2016-17

As the month of May commenced the faces of the students who had given the board examinations this year started to show signs of apprehension. Further the shifting dates of the results and rumours about the moderation of marks helped add to the tension. On the other hand some students hoped for good results so that the enticements they had been promised would be bestowed upon them by their parents.

The results for the ISC and the ICSE examinations were announced on the 29th of May, 2017. It would not be an overstatement to say that the students of both classes did the college proud. In the ISC branch Gursheesh Singh from the Maths stream and Utkarsh Lal from the Biology stream topped the list by scoring 97.75%.

In the second position were Raunak Makhija (Maths stream) and Akshat Rastogi (Biology Stream) who scored 97.5% each. Following them was Praneet Kumar Pandey from the Maths stream who scored 96.25%. From the Humanities stream, Danish Abbasi crowned the list by scoring 95.75%, while Rajat Sinha topped amongst the students from the Commerce stream by scoring 93.75%. The hard work of these candidates will be recognized at a later stage and it was only because of the diligence of these students and our teachers that our students achieved such prodigious results.

Coming to the ICSE branch Dhawal Gupta topped the College with an aggregate of 98.6%. He not only topped the college but also bagged the position of the city topper and came second in the State. Nabeel Zubair and Shubham Awasthi came second and third with an aggregate of 97.6% and 96.25% respectively. Approximately 100 candidates scored above 90%, the credit for which goes to our teachers who have over the years helped the students achieve such superb results.

ANKIT SAHAI 12-C AND AVIRAL SAXENA 12-C

THE 'REIGN'

The girls and boys of La Martiniere College, Lucknow collaborated together to perform a live event for the first time at a café in Gomti Nagar, Lucknow. 'The Reign' as they call themselves, performed 12 alternative, rock/pop songs which attracted over 400 people. The performance was covered by the Times of India who interviewed the band members on how they came up with the idea and executed their advertising plan to attract such a homologous crowd. The audience grooved and danced to the best of the songs. 'The Reign' got a lot of love and support though many of the guests had to wait outside the café for more than an hour to get a glimpse of the performance. 'The Reign' consisted of Vasundhara Prasad, Aastha Panwar, Saamya Mittal, Nikita Sethi, Aakash Agarwal, Rishubh Agarwal, Syed Jazib Shere and Samarth Sharma.

SYED JAZIB SHERE 12-B

BE SAVED

We all know that life isn't easy, and the most difficult period of life for a human being is his/her teenage years. During our teen years we start getting to know properly about the things that are happening around us. Teenage is the actual time to choose the right path in life.

Most of us have to face problems when we hit puberty and start indulging in things that are not right in the eyes of God. Satan does all he can and uses his powers to separate us from God. Most of the teenagers start doing things that are not right such as gambling, smoking, abusing, masturbation and pornography. These things are bad but they are not the only sins we commit in our daily life. Attitude, hatred, not having a clean heart and also sins. Whenever we are about to do something that is not right, we always hear a voice which is very soft but we just ignore it. That voice is the voice of God trying to save us. We sleep every night with the hope of waking up in the morning. Where does this hope come from? Hope comes from God. This means even if we are sinners God doesn't leave us. Teenagers wish to leave all the bad things that they are indulging in, but they are doing it for themselves, for their own heart. Not for God. If we ask for forgiveness we will be forgiven. God is caring, loving and forgiving. He doesn't care about the bad things that we have done and always loves us. We all are shown the right path but we have to decide either the way to heaven or to hell. We can hide things from our family, friends and close ones but we can't hide anything from God. He sees all good and bad.

Life is too short and after death we can have eternal life in heaven only if we repent for our sins. Salvation can only be found through God by doing good things. He showed me the right path and I am saved. We all can be saved all we need to do is to follow the path of God. The greatest weapon we have is prayer. Keep praying and be saved.

SARANSH ALEXANDER KUMAR 10-C